International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 2; Issue 5; September 2017; Page No. 714-716

प्राकृतिक संसाधनों का सरंक्षण वर्तमान एवं भविष्य की नितान्त आवश्यकता 'एक भौगोलिक अध्ययन'

डॉ जगदीश दुहन
ऐक्सटेन्शन लेक्चरर भूगोल विभाग, राजकीय महाविद्यालय बरवाला, हिसार, हरियाणा, भारत

प्रस्तावना

परिचयः

किन्हीं उद्धेश्यों, आवश्यकताओं और इच्छाओं को पूरा करने वाली वस्तुएं या साधन संसाधन कहलाते है ये वस्तुएं और साधन प्राकृतिक भी हो सकते हैं और मानवीय भी। इस दृष्टि से पृथ्वी पर बहुत सी वस्तुएं संसाधनों का रूप धारण नही कर पाती है कोई भी वस्तु संसाधन तभी बनती है जब उसमें कार्यात्कमता का गुण पैदा हो जाता है या वो वस्तु तब किसी काम के लायक बन जाती है तब वह संसाधन का दर्जा प्राप्त कर लेती है सांस्कृतिक दृष्टि से विकसित व बौद्धिक ज्ञान से परिपूर्ण मानव अपनी असीम इच्छाओं की पूर्ति के लिए प्रकृति के सहयोग से न केवल संसाधनों का निर्माण करता है, बल्कि उसका उपयोग भी करता है इस सन्दर्भ में जिम्मरमैन ने स्पष्ट लिखा है कि संसाधन होते नहीं बल्कि वे मानव के सहयोग से बन जाते हैं।

प्राकृतिक संसाधन

जिसमें प्रकृति निर्मित वस्तुओं को अध्ययन में शामिल किया जाता है जैसे जल, वायु, भमि, वन, सूर्य का प्रकाश, जीव जन्तु इत्यादि।

प्राकृतिक संसाधनो के सरंक्षण का अर्थ

प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण का अर्थ उनके विवेकपूर्ण ढंग से उपयोग करने से है ताकि संसाधनों की कम मात्रा से मानव का अधिक कल्याण हो सके। संरक्षण की विचारधारा इस दृष्टिकोण से सकारात्मक है न कि नकारात्मक। यह विचारधारा यह कभी नहीं कहती की संसाधनों का उपयोग करें ही नहीं उन्हें भविष्य के लिए बचाए रखें और जीवाश्म बनने दें। वास्तव में संसाधनों के संरक्षण के सम्बन्ध में जिम्मरमैन की यह परिभाषा विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि ''संरक्षण का अर्थ संसाधनों की वर्तमान खपत को न्यूनतम स्तर पर रखना एवं भविष्य में लम्बी अवधि के लिए आवश्यकताओं को पूरा करना हैं।''

संरक्षण की जरूरत व उसके उद्धेश्य

अर्थशास्त्र में नोबल पुरस्कार विजेता अर्मत्यसेन ने भी संरक्षण के सम्बन्ध में यही कहा है कि इसके बिना किसी देश का टिकाऊ विकास सम्भंव नहीं है। वर्तमान पीढ़ी के संसाधनों के सकारात्मक उपयोग से ही भावी पीढ़िया उनका उपयोग कर पांएगी। यह वर्तमान पीढ़ियो का महान त्याग है। पृथ्वी पर पाए जाने वाले संसाधन हमारी धरोहर है वर्तमान और भावी पीढ़ियों का इन पर समान रूप से हक है।

- विश्व स्तर पर जीवाश्म ईंधनों के लगातार बढ़ रहे उपयोग के कारण कार्बनडाईआक्साइड की मात्रा निश्चित रूप से बढ़ी है। जलवायु में परिवर्तन आए हैं जो समस्त जैव संसार के लिए अशुभ संकेत है।
- बिना नियोजित ढंग से प्राकृतिक संसाधनों का हो रहा उपयोग वर्तमान एंव भविष्य के लिए खतरा पैदा करने वाला है। जनसंख्या वृद्धि और उसकी बढ़ रही इच्छाओं को पूरा करने के लिए वनों को तीव्रता से काटा जा रहा है जिसे मृदा अपरदन, भूस्खलन व मरूस्थलीकरण बढ़ा है, भूमिगत जल, वर्षा की मात्रा तथा कृषि उपजों में कमी आई है। इनके संतुलन के लिए प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण जरूरी है।
- मनुष्य के सम्पूर्ण विकास के लिए जरूरी है उसकी मूलभूत जरूरतें तो पूरी होती रहनी चाहिए। प्राकृतिक संसाधनों का व्यावहारिक उपयोग मानव जीवन की निरन्तरता के लिए जरूरी है।

प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण

1. जल संसाधनों का सरंक्षण
2. मृदा संसाधनों का सरंक्षण
3. वायु संसाधनों का सरंक्षण
4. वन संसाधनों का सरंक्षण
5. मत्स्य संसाधनों का संरक्षण
6. खनिज संसाधनों का संरक्षण

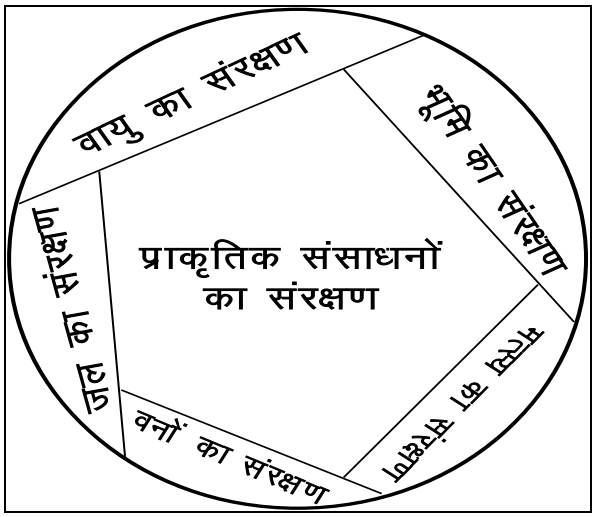

जल संसाधनों का संरक्षण

पृथ्वी पर जीवन को बनाए रखने में जल का बहुत बड़ा योगदान है यह एक चक्रीय संसाधन है जो हमें वर्षा, बर्फ एंव भूमि के नीचे से प्राप्त होता है। पेयजल, सिचाई, ऊर्जा उत्पादन सहित विविध कार्यों में जल की कमी निरन्तर देखी जा सकती है। पृथ्वी के 71 प्रतिशत भाग पर पाया जाने वाला जल पेयजल सहित विविध कार्यों में सीधा उपयोग नहीं किया जा सकता इसका उपचारण करके ही

इसे उपयोग में लाया जा सकता है उपचारण तकनीक बड़ी मंहगी तथा सब जगह उपलब्ध नहीं है। हमारे जीवन से जुड़ी कई आदतों में जल का न्यायसंगत उपयोग ही इसके संरक्षण का सबसे बड़ा कारगर उपाय है। मतलब जल की थोड़ी सी भी बर्बादी को रोकना, सिंचाई तन्त्र में जल का बहुत बड़ा हिस्सा खर्च होता है, अनियोजित सिंचाई के ढंग को छोड़कर भी पानी की बर्बादी रोकी जा सकती है। शुष्क व अर्धशुष्क प्रदेशों में सिंचाई, बौछारी सिंचाई जल का संरक्षण बड़ा उपाय हैं विश्व के विभिन्न भागों में पेयजल की समस्या को दूर करने के लिए रेन हार्वेस्टिंग पद्धति को अपनाया गया है जो बड़ी कारगर पद्धति है।

मृदा संसाधनों का संरक्षण

अप्रत्यक्ष रूप से मिट्टी सब प्राणियों के जीवन का आधार मानी जाती है क्योंकि इस पर उगने वाली फसलों एवं पेड़ पौधों पर जीवन के विभिन्न रूप टिके हुए है मृदा जैवमण्डल में महत्वपूर्ण नवीकरण योग्य संसाधन है लेकिन वर्तमान समय में यह मृदा अपरदन व ह्रास की समस्या से गुजर रही है।

विश्व के विभिन्न भागों में बनी हुई इस मृदा अपरदन की समस्या के लिए अनेक भौतिक कारक जैसे तीव्र गति से चलने वाली पवनें, बाढ़ मूसलाधार वर्षा इत्यादि एंव अनेक मानवीय कारक जैसे कृषि का अविचारित ढंग, (झूमिंग कृषि) इस समस्या के लिए उत्तरदायी है। मृदा अपरदन की इस समस्या से निपटने के लिए वृक्षारोपण, बाँध बनाना, पंक्तिबद्ध पौधारोपण, पशुचारण पर नियन्त्रण, कृषि प्रणाली में सुधार इत्यादि कारगर तरीकों को उपयोग में लाया जाना चाहिए।

- मृदा उर्वरता ह्रास की समस्या में मिट्टी की उपजाऊ शक्ति कम हो जाती है इसके लिए भी अनेक मानवीय एंव भौतिक कारक जिम्मेवार हैं इस समस्या से निपटने के लिए हरी खाद वाली फसलें ताल क्लोवर, स्वीट क्लोवर, अल्फाफा इत्यादि के साथ–साथ फसल चक्र पद्धति,उर्वरकों का प्रयोग जरूरी है।

वायु संसाधनों का संरक्षण

वायु हमारे जीवन का आधार है वायु के संरक्षण का अभिप्राय वायु की शुद्धता एवं उसकी गुणवता से है वायु में कुछ अशुद्धिया प्राकृतिक तौर पर ही होती है परन्तु अधिकतर अशुद्धिया मानव की अनियोजित जीवन शैली से जुड़ी हुई है। वायु में कणीय तत्व तथा रासायनिक प्रदुषक मिल जाने से वायुमण्डल का संगठन बदल जाता है। प्राकृतिक प्रदूषकों में 1. ज्वालामुखी राख, धूलिकण, वनों में लगने वाली आग से उठता हुआ धुआं, वायरस एवं बैक्टिरिया 2. मानव जनित प्रदूषकों में, जीवाश्मी ईधनों का जलना, खनन, परमाणु विस्फोट, रासायनिक प्रक्रियाएं, रासायनिक उर्वरकों व कीटनाशकों का प्रयोग इत्यादि उद्योगों में फिल्टर्स, मार्गन इत्यादि का प्रयोग काणिकीय पदार्थों पर नियन्त्रण के लिए करना, सौर उर्जा, विद्युत बैटरी, सी.एन.जी, वाहनों का प्रयोग, कम गन्धक का प्रयोग जैसे तरीके वायु संरक्षण से प्रत्यक्ष रूप से जुड़े हुए हैं। शुद्ध वायु की आवश्यकता आज विश्व की सबसे बड़ी जरूरत है।

वन संसाधनों का संरक्षण

वनों का हमारे जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है परन्तु जिस प्रकार से विश्व की जनसंख्या व्रीव गति से बढ़ रही है उससे हमारे वन संसाधन व्रीवता से सिकुड़ते जा रहे हैं एक अनुमान के अनुसार वनों को उनके उगने की गति से दस गुणा अधिक तेजी से काटा जा रहा है जो निसंदेह ही चिंता का विषय है उष्ण कटिबन्धिय वनों को वर्तमान में सबसे अधिक हानि हो रही है। पारिस्थितिकीय सन्तुलन में वन अहम भूमिका अदा करते हैं वनों का संरक्षण के लिए निम्नलिखित कारगर कदम तुरन्त उठाने की जरूरत है। 1. छोटे वृक्षों की कटाई रोकना, 2. वनों के पूरक पदार्थों का विकास 3. कटाई के साथ–साथ नए वृक्ष लगाना, 4. वनों को कीड़े मकोड़ों, बीमारियों व जंगली आग से उनकी सुरक्षा करना जैसे तमाम प्रयास वनों के लिए जरूरी है वनों में रहने वाले वन्य प्राणियों की सुरक्षा भी बड़ी जरूरी है जिसे वन्य प्राणियों का जीवन बचाया जा सके। इस मामले में विश्व के विभिन्न देशों में वन्य प्राणियों से सम्बन्धित अनेक सख्त कानून बनाए गए है जिनका दृढता से पालन करना जरूरी है ताकि वन्य जीवन को बचाया जा सके।

मत्स्य संसाधनो का संरक्षण

वैसे तो वर्तमान में बहुत से जीव जन्तु का संरक्षण उनकी विलुप्त हो रही प्रजातियों को देखते हुए बहुत जरूरी है। परन्तु खाद्य संसाधनों में महत्वूपर्ण स्थान रखने वाले मत्स्य संसाधन का सरंक्षण आज बहुत जरूरी हो गया है। मत्स्य संसाधन के संरक्षण में निम्नलिखित तरीके अपनाकर काफी हद तक इसकों संरक्षित किया जा सकता है जैसे अन्धाधुन्ध दोहन पर रोक, छोटी मछलियों के पकड़ने पर पाबन्धी, मत्स्य की कृत्रिम प्रजनन की व्यवस्था करना, लुप्त हो रही मत्स्यन की प्रजातियों पर अनुसन्धान, मत्स्यन व्यवसाय के लिए सरकारी प्रोत्साहन, ज्वारनदमुखों को प्रदूषण मुक्त रखना इत्यादि।

खनिज संसाधनों का संरक्षण

प्राकृतिक संसाधनों में खनिजों का सरंक्षण वर्तमान एंव भविष्य के लिए बड़ा जरूरी है। क्योंकि खनिजों के निर्माण में प्रकृति को हजारो साल लग जाते हैं एवं उनका पुर्नभरण भी नहीं हो सकता। बहुत सारे खनिज संसाधन ऐसे है जो एक बार प्रयोग करने के बाद सदा के लिए समाप्त हो जाते हैं उदाहरणतय जीवाश्म ईंधन (कोयला, पैट्रौलियम) कुछ खनिज संसाधनों ऐसे भी है। जिनका बार–बार प्रयोग किया जा सकता है जैसे लोहा चक्रीय संसाधन है। अगर विश्व में खनिज संसाधनो विशेषकर कोयला व पेट्रोलियम को निकालने की यही दर रही तो शायद अगले 50 वर्षों बाद ये समाप्ति की कगार पर पहुंच जाएंगे। अतः इनका संरक्षण जरूरी है निम्नलिखित उपाय खनिज संसाधनों के संरक्षण से सीधे तौर से जुड़े हुए हैं। खनिजों का पुनःप्रयोग विशेषकर धात्विक खनिजों का, भू–गर्भ से खनिजों को निकालने की तकनीक आधुनिक होना, ताकि खनिजों की बर्बादी कम हो, बहुलता से प्राप्त होने वाले एल्यूमिनियम जैसे खनिजों का कम प्राप्त होने वाली तांबा जैसी धातुओं के स्थान पर प्रयोग करना, लोहे जैसी अनेक धातुओं का पुनःप्रयोग, धातुओं से बनी हुई वस्तुओं व उपकरणों पर पेन्ट, ग्रीस, तेल का प्रयोग करके उनको लम्बी अवधि तक बने रहने की क्षमता विकसित करना, खनिज तेल के स्थान पर सी.एन.जी. का प्रयोग इत्यादि।

निष्कर्षः

पृथ्वी पर लम्बे समय तक जीवन को बनाएं रखने के लिए प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण बड़ा जरूरी है विश्व स्तर पर अनेक देशों में अब भी प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के लिए कड़े कदम उठाने की जरूरत है तभी पृथ्वी रूपी महान रंगमंच पर पारिस्थितिकी सन्तुलन बना रह सकता है। अन्यथा पृथ्वी पर पारिस्थितिकीय असन्तुलन की दशा जीवन के अस्तित्व को समाप्त कर सकती है।

सन्दर्भ सूची

1. सिंह सविन्द्र– पर्यावरण भूगोल प्रयाग पुस्तक भवन इलाहाबाद।
2. कौशिक गर्ग, संसाधन एवं पर्यावरण रस्तोगी पब्लिकेशन्स मेरठ।
3. मानव भूगोल संसाधन एंव पर्यावरण, अशोक दिवाकर।
4. गुर्जर जाटः संसाधन एंव पर्यावरण, पंचशील प्रकाशन जयपुर (2004)
5. इन्टरनेट।